**International Research Journal of Human Resource and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018**
**Website**-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# "माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

**शम्भु कुमार शर्मा**
शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, पचामा (सीहोर)

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस हेतु न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों {शासकीय विद्यालय के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) तथा अशासकीय विद्यालय के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ)} का चयन कर उन पर डॉ. एन.एन. श्रीवास्तव एवं शशिप्रभा दुबे की 'पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया तथा शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में, छात्राओं की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर अभिवृत्ति पाई गयी।

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म–जन्मांतर का संबंध है। शिक्षा आंतरिक वृद्धि तथा विकास की न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य के जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक तथा सभ्य बनाना है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी विचार शक्ति तथा तर्क शक्ति, समस्या समाधान तथा बौद्धिकता, प्रतिभा तथा रूझान सकारात्मक भावुकता तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों तथा रूचियों को विकसित कर सकता है। अभिवृत्तियां, मूल्य तथा आदर्श हमारे व्यवहार को निर्देशित तथा नियंत्रित करते हैं। जीवन और संसार को हम जिस अर्थ के संदर्भ में समझाने की चेष्टा करते है, उस अर्थ को सामान्य रूप से अभिवृत्ति कहा जाता है। अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी कार्य, किसी वस्तु अथवा किसी विषय के प्रति किसी व्यक्ति का रूझान या दृष्टिकोण है। यह सकारात्मक व नकारात्मक हो सकता है। अभिवृत्ति

**© Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वास्तविक रूप से एक मूल या बीज योग्यता है जिसकी वृद्धि तथा विकास वातावरण में अनुकूलता द्वारा होता है।

मनुष्य और प्रकृति के संतुलन में मूल्य एवं अभिवृत्ति पर आधारित शिक्षा सहायक है। प्राकृतिक संतुलन द्वारा मनुष्य तथा समाज स्वस्थ रहता है। किन्तु वर्तमान समय में मानव द्वारा प्रकृति के साथ हस्तक्षेप में वृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण पर्यावरणीय अभिवृत्ति का अभाव है। इस समस्या का समाधान हेतु सरकार ने विभिन्न विषयों के साथ–साथ पर्यावरण अध्ययन को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रयास किये हैं, जो विद्यार्थियों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति को विकसित करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

**हैनरी डी.थोरू** ने सत्य ही कहा है –''एक उपयुक्त ग्रह की अनुपस्थिति में एक सुन्दर घर की क्या उपयोगिता है।'' यदि हम आज इस दिशा में कोई कदम उठाते हैं तो इसका परिणाम हमें अगले 40–50 वर्षों में देखने को मिलेगा। हम विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों जैसे–पर्यावरणीय संरक्षण, जीव हिंसा, वृक्षों का काटना, जल संरक्षण आदि का परीक्षण करके पर्यावरण ह्रास के कारणों को खोजकर, पर्यावरणीय समस्याओं का हनन करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके द्वारा विद्यार्थियों के पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति को पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए विकसित किया जा सकता है। अतः इसी कारण से शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन अध्ययन करने का निश्चय किया।

इस संदर्भ में अनेक शोध कार्य किए गये हैं जैसे **शाहनबाज (1990)** ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों और विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापक के विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के अध्यापक के विद्यार्थियों में अधिक है। **पांडेय, अमरेश चन्द (1994)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि शहरी छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। **घोष, कुमुद (2014)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्य पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर, शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया। **कौर, हरप्रीत एवं कौर, रमनदीप (2017)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि किशोरावस्था के उच्च वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता, निम्न स्तर की वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले किशोर छात्र एवं छात्राओं से बेहतर पाई गई, अर्थात् वैज्ञानिक अभिवृत्ति का पर्यावरण जागरूकता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। **अरल, नेस; बैरम, नुरान एवं कैलिक, चिगुर (2017)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि पर्यावरण जागरूकता का पर्यावरण के प्रति

अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया तथा उच्च स्तर की पर्यावरण जागरूकता वाले विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति उच्च अभिवृत्ति पाई गई। आत्मसम्मान का पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया तथा जिन विद्यार्थियों में आत्मसम्मान का स्तर उच्च पाया गया उनकी पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति भी उच्च पाई गई।

**उद्देश्य :–**

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना :–**

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

**न्यादर्श :–**

न्यादर्श के चयन के लिए भोपाल जिले में स्थित 04 माध्यमिक विद्यालयों (02 शासकीय एवं 02 अशासकीय) का चयन कर इन विद्यालयों की कक्षा 9वीं एवं 10वीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राओं ) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

**उपकरण :–**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए डॉ. एन. एन. श्रीवास्तव एवं शशिप्रभा दुबे की 'पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया गया है।

**शोध विधि :–**

सर्वप्रथम भोपाल जिले में स्थित समस्त माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से 04 माध्यमिक विद्यालयों (02 शासकीय एवं 02 अशासकीय) का चयन करके, इन विद्यालयों की कक्षा 9वीं एवं 10वीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों {शासकीय विद्यालयों के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) तथा अशासकीय विद्यालयों के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ)} का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर डॉ. एन.एन. श्रीवास्तव एवं शशिप्रभा दुबे की 'पर्यावरण अभिवृत्ति मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर मॉस्टर शीट तैयार की गई। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण कर परिणाम प्राप्त किये गये तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

**परिणामों का विश्लेषण :–**

**तालिका 01**

**माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति संबंधी तुलनात्मक परिणाम**

| समूह | विद्यालय का प्रकार | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | 'पी' मान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | शासकीय | 50 | 50.28 | 13.04 | 1.07 | > 0.05 |
| | अशासकीय | 50 | 52.92 | 11.67 | | |
| छात्रा | शासकीय | 50 | 44.54 | 14.68 | 0.94 | > 0.05 |
| | अशासकीय | 50 | 46.96 | 10.64 | | |
| विद्यार्थी | शासकीय | 100 | 47.41 | 14.18 | 1.38 | > 0.05 |
| | अशासकीय | 100 | 49.94 | 11.56 | | |

स्वतंत्रता के अंश 98, 198 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98, 1.97

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.07, 0.94, 1.38 स्वतंत्रता के अंश 98, 198 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1.98, 1.97 की अपेक्षा कम हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

**तालिका 02**

**माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति संबंधी तुलनात्मक परिणाम**

| विद्यालय का प्रकार | समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | 'पी' मान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शासकीय | छात्र | 50 | 50.28 | 13.04 | 2.07 | < 0.05 |
| | छात्राएँ | 50 | 44.54 | 14.68 | | |
| अशासकीय | छात्र | 50 | 52.92 | 11.67 | 2.67 | < 0.01 |
| | छात्राएँ | 50 | 46.96 | 10.64 | | |

स्वतंत्रता के अंश 98 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98, 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.07, 2.67 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05, 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1.98, 2.63 की अपेक्षा अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया तथा शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में, छात्राओं की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर अभिवृत्ति पाई गयी।

**निष्कर्ष :–**

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया तथा शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में, छात्राओं की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर अभिवृत्ति पाई गयी।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


चक्रवर्त्ती, पुरूषोत्तम भट्ट (2006) **'पर्यावरण चेतना',** म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

गोयल, एम. के. (2007–08) **'पर्यावरण शिक्षा',** अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

जैन, एस.के. (2004) **'पर्यावरण शिक्षा',** अग्रसेन शिक्षा प्रकाशन, जयपुर

श्रीवास्तव, पंकज (2008) **'पर्यावरण शिक्षा',** म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

उपाध्याय, राधावल्लभ (2007–08) **'पर्यावरण शिक्षा',** अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा

शर्मा, आर.ए. (2008) **'पर्यावरण शिक्षा',** आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

श्रीवास्तव, डी. एन. (नवीन संस्करण) **'सांख्यिकीय एवं मापन',** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

Buch, M.B. (1983-88) : **Fourth Survey of Research in Education,** National Council of Education Research and Training, New Delhi, Vol. I & II

Buch, M.B. (1988-92) : **Fifth Survey of Research in Education,** National Council of Education Research and Training, New Delhi, Vol. I & II

**Ghosh, Kumud (2014)** "Environmental Awareness among secondary school students of Galaghat District in the State of Assam and their Attitude towards Environment Education", *IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS), Volume 19, Issue 3, Ver. II, March 2014, Page No. 30-34*

**Sindhu, Poonam and Shingh, Suman (2014)** "A Study of Awareness towards Environmental Education among the students at secondary Level in Gurgaon District", *International Journal of Scientific and Research Publication, Volume 4, Issue 1, January 2014, Page No. 1-4*

**Shahnawaj (1990)** "Environmental awareness and environmental attitude of secondary and higher secondary schools teachers and students", *Ph. D. Education, University of Rajasthan, in Fifth Survey of Educational Research (1988-1992), Volume 2, NCERT New Delhi, Page No. 1759*

**Aral, Nese; Bayram, Nuran and Celir, Cigur (2017)** "A study of Relationship between Environmental Awareness and Environmental Attitudes among High school students", *International Journal of Recent Advances in organizational Behaviors and Decision Sciences (IJRAOB), Volume 3, Issue 1, 2017, Page No. 948-955*

**Kaur, Harpreet and Kaur, Ramandeep (2017)** "Study of Environmental Awareness among Adolescents in Relation to their Scientific Attitude", *Educational Quest: An International Journal of Education and Applied Social Science, Volume 8, special Issue, June 2017, Page No. 283-291*